Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सिंध के बौद्ध राजाओं के समय का सामाजिक सांस्कृतिक वैभव, एक ऐतिहासिक अध्ययन (चचनामा के विशेष संदर्भ में)

डॉ. आकाश ताहिर*

* सहा. प्राध्यापक एवंविभागाध्यक्ष (इतिहास) पी.एम.सीओ.ई. शासकीय कला एवं वि. महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – यह शोध पत्र चचनामा में वर्णित तथ्यों के आधार पर सिंध के बौद्ध राजाओं के शासनकाल के दौरान हुए सामाजिक सांस्कृतिक विकास का विश्लेषण करता है। तत्कालिन समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक विकास, सांस्कृतिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सिंध ने बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति को अन्य क्षेत्रों में फैलाया।

शोध पत्र का उद्देश्य: बौद्ध राजाओं शासनकाल में हुए विकास का अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में किस प्रकार महत्व था और सिंध किस तरह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरा। दूसरे शब्दों में इस शोध पत्र का उद्देश्य विभिन्न प्रश्नों का उत्तर निकालना है जैसे– सिंध के बौद्ध राजाओं के शासनकाल में सामाजिक और सांस्कृतिक विकास किस प्रकार हुआ। बौद्ध धर्म ने सिंध के समाज और संस्कृति को किस प्रकार प्रभावित किया। सिंध के व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध अन्य देशों के साथ कैसे थे।

सिंध, भारत के पश्चिमोत्तर में स्थित एक ऐतिहासिक क्षेत्र, प्राचीन काल से ही विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों का संगम रहा है।[1] इस क्षेत्र का इतिहास विभिन्न राजवंशों के उत्थान और पतन का साक्षी रहा है। चचनामा, जो की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ है, हमें सिंध के बौद्ध राजाओं के शासनकाल के दौरान सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की जानकारी प्रदान करता है।[2] इस शोध पत्र में हम चचनामा में वर्णित तथ्यों के आधार पर सिंध के बौद्ध राजाओं के समय के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का विश्लेषण करेंगे।

चचनामा के अनुसार, सिंध में बौद्ध धर्म का प्रसार तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक के शासनकाल के दौरान हुआ था।[3] सम्राट अशोक के प्रयासों से बौद्ध धर्म न केवल भारत में फैला, बल्कि इसने सीमावर्ती क्षेत्रों में भी अपनी जड़ें जमाई। सिंध जो की व्यापारिक मार्गों के चौराहे पर स्थित था, बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।[4] इसके बाद, कई बौद्ध राजाओं ने सिंध पर शासन किया। जिनके शासनकाल में इस क्षेत्र में सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा मिला। इन राजाओं में से कुछ प्रमुख थे राय वंश, जिन्होंने सिंध पर कई शताब्दियों तक शासन किया। राय वंश के शासनकाल में सिंध ने राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि का अनुभव किया। जिसने सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान किया।[5]

सिंध में कई बौद्ध राजाओं ने शासन किया। चचनामा और अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों में कुछ प्रमुख राजाओं का उल्लेख मिलता है। यहां कुछ प्रमुख बौद्ध राजाओं और उनके वंशों का विवरण दिया गया है–

1. **राय वंश :** यह वंश सिंध का एक प्राचीन और शक्तिशाली वंश था। इस वंश के राजाओं ने सिंध पर कई शताब्दियों तक शासन किया। राय वंश के प्रमुख राजाओं में से कुछ थे राय दीवाच, राय सहरासी और राय दुहर।[6]

राय दीवाच : शासनकाल लगभग 450 ई.– 520 ई.
राय सहरासी : शासनकाल लगभग 520 ई.– 550 ई.
राय दुहर : शासनकाल लगभग 550 ई.– 622 ई.

2. **चच वंश :** यह वंश राय वंश के बाद सत्ता में आया। चच वंश के संस्थापक चच था। चच के बाद उनका पुत्र दाहिर राजा बना।[7]

चच : शासनकाल लगभग 632 ई.– 671 ई.
दाहिर : शासनकाल लगभग 671 ई.– 712 ई.

सामाजिक विकास: सिंध के बौद्ध राजाओं के शासनकाल में सामाजिक विकास अपने चरम पर था। बौद्ध धर्म के प्रभाव ने समाज को अधिक समावेशी और समतापूर्ण बनाया।[8] बौद्ध धर्म ने जाति और वर्ण के आधार पर भेदभाव को नकारते हुए सभी मनुष्यों की समानता का समर्थन किया। इस विचारधारा ने समाज में सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया और विभिन्न वर्गों के बीच सहयोग और सद्भाव को प्रोत्साहित किया।[9] बौद्ध शिक्षा और संस्थानों के विकास ने समाज में ज्ञान और शिक्षा के स्तर को भी बढ़ाया। बौद्ध मठ और विश्वविद्यालय जैसे की मोहनजोदड़ो और तक्षशिला शिक्षा के प्रमुख केंद्र बन गए। जहां न केवल बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जाती थी बल्कि अन्य विषयों जैसे की दर्शन, विज्ञान, और कला का भी अध्ययन किया जाता था।[10] इन संस्थानों ने समाज में ज्ञान और शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और समाज को अधिक प्रगतिशील और विचारशील बनाया।

सांस्कृतिक विकास: सिंध के बौद्ध राजाओं के शासनकाल में सांस्कृतिक विकास भी अपने चरम पर था। बौद्ध धर्म के प्रसार ने कला, साहित्य और वास्तुकला को बढ़ावा दिया।[11] इस समय में कई स्तूपों, विहारों और चैत्यों का निर्माण हुआ जो बौद्ध कला और वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।[12] इन संरचनाओं में बुद्ध की मुर्तियों और जातक कथाओं के चित्रण ने बौद्ध कला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित किया। इसके अलावा बौद्ध विद्वानों और

दार्शनिकों ने विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे जिन्होंने भारतीय संस्कृति और ज्ञान को समृद्ध किया। इन ग्रंथों में बौद्ध धर्म के सिद्धांतों, दर्शन, और नैतिकता का विस्तृत वर्णन है, जो आज भी बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं।[13]

सिंध में संगीत, नृत्य और नाटक जैसी ललित कलाओं का भी विकास हुआ। बौद्ध धार्मिक उत्सवों और त्योहारों ने इन कलाओं को बढ़ावा दिया और समाज में सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया। इन कलाओं ने न केवल लोगों का मनोरंजन किया बल्कि उन्होंने बौद्ध धर्म के संदेशों को भी जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[14]

उपसंहार: चचनामा में वर्णित के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि सिंध के बौद्ध राजाओं के शासनकाल में सामाजिक और सांस्कृतिक विकास अपने चरम पर था। बौद्ध धर्म के प्रभाव ने समाज को अधिक समावेशी और समतापूर्ण बनाया, जबकि कला, साहित्य और वास्तुकला के विकास ने सांस्कृतिक समृद्धि को बढ़ावा दिया।[15] इन विकासों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभाव था। जिससे सिंध एक महत्वपूर्ण व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरा। सिंध के बौद्ध राजाओं का शासनकाल भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जो हमें सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक विकास और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के महत्व के बारे में बहुमूल्य सबक सिखाता है।[16]

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सिंध का इतिहास: डॉ. एच. टी. लमानी, पृ. 12।
2. चचनामा: पृ. 5।
3. चचनामा, पृष्ठ संख्या 52।
4. सिंध का इतिहास, डॉ. एच. टी. लमानी, पृ. 78
5. वही, पृ. 92।
6. सिंध का इतिहास: डॉ. एच. टी. लमानी, पृ. 12।
7. चचनामा: पृ. 78।
8. बौद्ध धर्म का इतिहास: आचार्य नरेंद्र देव, पृ. 125।
9. भारत की सांस्कृतिक विरासत, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 88।
10. प्राचीन भारत का आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास, डॉ. राधाकृष्ण चौधरी, पृ. 152।
11. बौद्ध धर्म का इतिहास, आचार्य नरेंद्र देव, पृ. 152।
12. भारतीय कला एवं संस्कृति का इतिहास, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 95।
13. प्राचीन भारत का इतिहास, डॉ. रामशरण शर्मा, पृ. 188।
14. भारतीय कला एवं संस्कृति का इतिहास, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 210।
15. चचनामा, पृ. 285।
16. सिंध का इतिहास, डॉ. एच.टी. लमानी, पृ. 310।
17. Ancient Sindh: A Study in its Civilization: M.R. Majumdar
18. The History of Sindh: Mir Ali Sher Qanbar
19. Buddhist Art in India: Heinrich Zimmer

****